भारत का शैक्षिक वातावरण

*डॉ. के.एल.मीना

भारतीय शिक्षा प्रणाली

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है जो कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित होती है। यह ज्ञान को बदलने, युवा छात्रों के कौशल और चरित्र को विकसित करने में मदद करता है। किसी भी मनुष्य को तर्कसंगत, विनम्र और दयालु बनने के लिए शिक्षा अनिवार्य है। शिक्षा हमें ज्ञान प्रदान करती है जो एक मूर्त संपत्ति है। यह तर्क के साथ सोचने, अपने सपनों को आगे बढ़ाने और एक जिम्मेदार जीवन जीने की क्षमता प्रस्तुत करता है। भारत में शिक्षा का इतिहास हजारों साल पहले सिंधु घाटी सभ्यता से मिलता है ।

हाँ, हमारे देश का शिक्षा के क्षेत्र में एक समृद्ध इतिहास है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि ''भारतीय हजारों वर्ष पूर्व भी सुसभ्य थे। भारत में नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय प्रमुख थे। 5वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, ये विश्वविद्यालय दुनिया में सीखने के लिए सबसे अच्छे स्थानों में से एक थे। भारत शिक्षा प्रणाली में समृद्ध पृष्ठभूमि वाले सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक है। कई विदेशी आक्रमणों, लड़ाइयों और आक्रमणों के कारण प्राचीन विश्वविद्यालय ध्वस्त हो गये। फिर भी हमारे देश में शिक्षा का चलन सैकड़ों वर्षों से कायम है। ''1

भारत में 06 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रदान की जाती है। शिक्षा का प्रबंधन सरकार के अधीन सार्वजनिक शिक्षा प्रणालियों द्वारा तीन स्तरों पर किया जाता है। अधिकांश स्कूल और कॉलेज सरकार की देखरेख में निजी तौर पर चलाए जाते हैं।

सरकार द्वारा संचालित कॉलेजिएट स्तर की शिक्षा हमारे देश में सर्वोत्तम है। स्कूल स्तर पर, सरकार निस्संदेह विफल रही है। सरकार प्राथमिक शिक्षा पर उतना ध्यान केंद्रित करने में विफल रही, जितना स्नातक स्तर पर। प्रारंभिक शिक्षा पर किया गया व्यय उच्च शिक्षा की तुलना में अधिक प्रतिशत प्राप्त करता है। फिर भी सरकार वह गुणवत्ता नहीं दे पाई जो निजी स्कूल देते हैं।

भारत में प्रत्येक राज्य में शैक्षिक विकास की दर भिन्न–भिन्न है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ राज्यों में शिक्षा पर प्रति व्यक्ति खर्च अधिक है। ''जो राज्य आर्थिक रूप से कमजोर हैं वे शिक्षा पर कम राशि खर्च करते हैं। भारत 14 वर्ष की आयु तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करता है। वांछनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए मुफ्त शिक्षा पर खर्च बढ़ाने की जरूरत है।''2 भारत में शिक्षा प्रणाली का कार्य थोड़ा जटिल है और इसमें काफी सुधार की आवश्यकता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में आने वाली समस्याएँ

भारत में तमाम कोशिशों के बावजूद शिक्षा व्यवस्था अभी भी निचले स्तर पर है। हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था का विकास न हो पाने के कई कारण हैं।

एक बड़ी समस्या धन की कमी है जो भारत में शिक्षा के विकास को प्रभावित करती है। कम धनराशि के कारण कई विकास कार्यक्रम पूरे नहीं हो पाते। बुनियादी ढांचा खराब होने के कारण छात्र गुणवत्ता के साथ नहीं सीख सके। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक का उपयोग बहुत कम है। विदेशों में अपनी शिक्षा प्रणाली में बहुत सारी सुविधाएं प्रदान करते हैं। इसके अलावा, पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं का बुनियादी ढांचा भी निम्न स्तर का है। जब धनराशि अधिक होगी तभी प्राथमिक और उच्च दोनों स्तरों पर शिक्षा फलेगी–फूलेगी। सरकार को शिक्षा पर धन का परिव्यय बढ़ाना चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का वर्तमान परिदृश्य

''प्राथमिक शिक्षा में बहुत सारी समस्याएँ हैं। सबसे प्रमुख कारण छात्रों के लिए खराब बुनियादी ढांचा होगा। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने वाले माहौल में पढ़ाई जरूरी है। कई ग्रामीण इलाकों में स्कूलों में बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं. उनके पास उचित स्वच्छता, पीने के पानी और साफ–सुथरी कक्षाओं का अभाव है। दूसरी समस्या प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी है।''3 इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई छूट जाती है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के कारण स्कूल छोड़ने की दर अधिक है। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या तो बहुत है लेकिन गुणवत्ता के मामले में हम अभी भी पीछे हैं।

उच्चतर माध्यमिक स्कूली शिक्षा पूरी होने पर कॉलेज शिक्षा की लागत बहुत अधिक होती है। ऐसे कई सरकारी संस्थान हैं जो न्यूनतम शुल्क के साथ काम करते हैं। लेकिन निजी संस्थान ढेर सारी सुविधाओं और नौकरी के अवसरों की गारंटी देते हैं। निजी संस्थान में डिग्री हासिल करने के लिए बड़ी रकम की आवश्यकता होती है। अधिकांश छात्र अपनी खराब पृष्ठभूमि के कारण निजी कॉलेजों में शिक्षा का विकल्प चुनने में असमर्थ हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि वे किफायती नहीं हैं। सरकार को निजी संस्थानों को अपने हाथ में लेना चाहिए और लागत को नियंत्रित करना चाहिए। इससे छात्रों के लिए निजी शिक्षा को किफायती बनाने में मदद मिलेगी।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की भविष्य की संभावनाएँ

भारत विश्व के विकासशील देशों में से एक है। हमारी शिक्षा प्रणाली की भविष्य की योजनाएँ एक आशा जगाती हैं। शीघ्र ही हम शिक्षा में वांछित विकास की आशा कर सकते हैं।

हाल के वर्षों में, युवाओं और वयस्कों दोनों में साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह मान्यता प्राप्त होने वाला एक बहुत ही सकारात्मक परिणाम है। हालाँकि, वहाँ अभी भी काफी निरक्षरता दर है। शत–प्रतिशत साक्षरता दर प्रदान करने के लिए सरकार को आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इसका समाधान होना ही चाहिए ''समाज में जब शिक्षा की बात आती है तो हमें एक व्यक्ति के रूप में लैंगिक विविधता नहीं दिखानी चाहिए। बेशक प्रत्येक व्यक्ति को अपना हित साधने का अधिकार होना चाहिए। इसके अलावा, सरकार को भारत में शिक्षा के विकास के लिए पर्याप्त धन आवंटित करना चाहिए। फंड को शैक्षणिक संस्थानों में बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी के उपयोग में सुधार करना चाहिए।''4

उच्च शिक्षा सभी के लिए सस्ती होनी चाहिए। कई सरकारी संस्थान जो असाधारण गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हैं, उन्हें समायोजित करना महंगा है। गरीब पृष्ठभूमि के योग्य छात्र इन संस्थानों में पढ़ने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। सरकार मुफ्त में उच्च शिक्षा नहीं दे सकी. उन्हें कम से कम इसे सभी के लिए किफायती बनाना चाहिए। यदि शिक्षा महंगी न हो तो हमारा देश विश्व स्तर पर शीर्ष स्थान पर हो सकता है। भारत को शिक्षा की गुणवत्ता

उत्कृष्ट स्तर तक बनाने की जरूरत है। विकसित देश बनने का यही एकमात्र रास्ता है.

हमारे देश में हर स्तर पर ऊंचाई तक पहुंचने की पूरी संभावनाएं मौजूद हैं। भारतीयों ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कीं जिन्हें दुनिया भर में मान्यता मिली है। हमें युवा पीढ़ी को बड़ी आकांक्षाओं के लिए प्रेरित करके उपलब्धि दर बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें आवश्यक कौशल और प्रशिक्षण प्रदान करना भारत के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, शिक्षा प्रणाली में गहराई से सुधार होना चाहिए और सर्वोत्तम होना चाहिए।

एक बच्चे की शिक्षा की शुरुआत स्कूल से होती है। ''हमारे देश में शिक्षा का निजीकरण हो गया है। निजी स्कूल अपने छात्रों के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अन्य सुविधाएँ प्रदान करते हैं। लेकिन गरीब परिवारों के छात्रों के लिए ये निजी स्कूल बहुत महंगे हैं।''5 हमारा देश 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करता है। गरीब बच्चे सरकारी स्कूलों में दाखिला लेते हैं और त्रासदी का सामना करते हैं।

एक जगह जो उनके भविष्य को आकार देने के लिए बनी है वह अचानक अपने कार्य में विफल हो रही है। छात्रों को बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो उनकी प्राथमिक शिक्षा को नष्ट कर देती हैं। ''अधिकांश सरकारी स्कूलों में उचित बुनियादी ढांचा नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में, स्कूल एकल शिक्षक के साथ चलते हैं या बदतर मामलों में, कोई शिक्षक ही नहीं होता है। इससे बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं और अशिक्षित हो जाते हैं।''6 प्राथमिक शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए। जब आधार कमजोर हो तो आगे प्रगति की उम्मीद नहीं की जा सकती।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की गुंजाइश

प्रायमरी से लेकर कॉलेज स्तर तक हमारी पूरी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में ही होती है। यूरोप, अमेरिका और चीन जैसे देशों में शिक्षा का माध्यम अपनी भाषा है। बहुभाषी होने के कारण भारत को सभी के लिए एक समान भाषा तय करने में विवाद का सामना करना पड़ता है। इसका समाधान लोगों को अपनी भाषा में पढ़ाई की अनुमति देकर किया जा सकता है। इससे गहन बुद्धि और ज्ञान प्राप्त होगा। कई शोधकर्ता अपनी भाषा में सोचते और काम करते हैं जिससे खोज में मदद मिलती है। प्राथमिक विद्यालय तक अपनी मातृभाषा में शिक्षा लागू की जानी चाहिए।

कई प्रतिभाशाली और मेधावी छात्रों को हमारे देश में उपयुक्त नौकरियां नहीं मिल सकीं। इसलिए वे हमारा देश छोड़कर बेहतर नौकरी की तलाश में विदेश चले जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप हमारे देश के विकास के लिए काम करने वाले बुद्धिमान दिमागों का नुकसान होता है। इस घटना को ब्रेन ड्रेन कहा जाता है। हमें योग्य छात्रों को संतोषजनक नौकरी के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

कई कारणों से बड़ी संख्या में बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं। इसके परिणामस्वरूप हमारे देश में निरक्षरता दर बढ़ रही है। अनेक पहलों के बावजूद हम शत–प्रतिशत साक्षरता दर हासिल नहीं कर सके हैं। उन्नत देश 100: साक्षर हैं और यही उनकी सफलता का रहस्य है। हमारी सरकार को 18 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। पहले 14 वर्ष की आयु को बढ़ाया जाना चाहिए। छात्रों को स्कूल छोड़ने से रोका जाना चाहिए।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली

अच्छी शिक्षा जीवन में बहुत से उद्देश्यों को प्रदान करती है जैसे व्यक्तिगत उन्नति को बढ़ावा, सामाजिक स्तर में बढ़ावा, सामाजिक स्वस्थ में सुधार, आर्थिक प्रगति, राष्ट्र की सफलता, जीवन में लक्ष्यों को निर्धारित करना, हमें

सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूक करना और पर्यावरण समस्याओं को सुलझाने के लिए हल प्रदान करना और अन्य सामाजिक मुद्दे आदि। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रयोग के कारण, आजकल शिक्षा प्रणाली बहुत साधारण और आसान हो गयी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, अशिक्षा और समानता के मुद्दे को विभिन्न जाति, धर्म व जनजाति के बीच से पूरी तरह से हटाने में सक्षम है।

विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है

विद्या एक ऐसा धन है जिसे ना तो कोई चुरा सकता है और ना ही कोई छीन सकता। यह एक मात्र ऐसा धन है जो बाँटने पर कम नहीं होता, बल्कि की इसके विपरीत बढ़ता ही जाता है। हमारे समाज में जो शिक्षित व्यक्ति होते हैं उनका एक अलग ही मान सम्मान होता है और लोग उन्हें हमारे समाज में इज्जत भी देते हैं। इसलिए हर व्यक्ति चाहता है कि वह एक साक्षर हो प्रशिक्षित हो इसीलिए आज के समय में हमारे जीवन में पढ़ाई का बहुत अधिक महत्व हो गया है। इसीलिए आपको यह याद रखना है कि शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है इसकी वजह से हमें हमारे समाज में सम्मान मिलता है जिससे हम समाज में सर उठा कर जी सकते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का महत्व

हम अपने अभिभावकों और शिक्षक के प्रयासों के द्वारा अपने जीवन में अच्छे शिक्षित व्यक्ति बनते हैं। वे वास्तव में हमारे शुभ चिंतक हैं, जिन्होंने हमारे जीवन को सफलता की ओर ले जाने में मदद की। आजकल, शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए बहुत सी सरकारी योजनाएं चलायी जा रही हैं ताकि, सभी की उपयुक्त शिक्षा तक पहुँच संभव हो। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को शिक्षा के महत्व और लाभों को दिखाने के लिए टीवी और अखबारों में बहुत से विज्ञापनों को दिखाया जाता है क्योंकि पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में लोग गरीबी और शिक्षा की ओर अधूरी जानकारी के कारण पढ़ाई करना नहीं चाहते हैं।

गरीबों और माध्यम वर्ग के लिए शिक्षा

पहले, शिक्षा प्रणाली बहुत ही महंगी और कठिन थी, गरीब लोग 12वीं कक्षा के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं थे। समाज में लोगों के बीच बहुत अन्तर और असमानता थी। उच्च जाति के लोग, अच्छे से शिक्षा प्राप्त करते थे और निम्न जाति के लोगों को स्कूल या कालेज में शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। यद्यपि, अब शिक्षा की पूरी प्रक्रिया और विषय में बड़े स्तर पर परिवर्तन किए गए हैं। इस विषय में भारत सरकार के द्वारा सभी के लिए शिक्षा प्रणाली को सुगम और कम महंगी करने के लिए बहुत से नियम और कानून लागू किये गये हैं।

सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण, ''दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने उच्च शिक्षा को सस्ता और सुगम बनाया है, ताकि पिछड़े क्षेत्रों, गरीबों और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए भविष्य में समान शिक्षा और सफलता प्राप्त करने के अवसर मिलें। भलीभाँति शिक्षित व्यक्ति एक देश के मजबूत आधार स्तम्भ होते हैं और भविष्य में इसको आगे ले जाने में सहयोग करते हैं। इस तरह, शिक्षा वो उपकरण है, जो जीवन, समाज और राष्ट्र में सभी असंभव स्थितियों को संभव बनाती है।''

शिक्षा उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण

शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। हम जीवन में शिक्षा के इस उपकरण का प्रयोग करके कुछ भी अच्छा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों को सामाजिक और पारिवारिक आदर और एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रुप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। यह एक व्यक्ति को जीवन में एक अलग स्तर और अच्छाई की भावना को विकसित करती

है। ''शिक्षा किसी भी बड़ी पारिवारिक, सामाजिक और यहाँ तक कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी हल करने की क्षमता प्रदान करती है। हम से कोई भी जीवन के हरेक पहलू में शिक्षा के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकता। यह मस्तिष्क को सकारात्मक की ओर मोड़ती है और सभी मानसिक और नकारात्मक विचारधाराओं को हटाती है।''8

निष्कर्ष

शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को बड़े स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है तथा इसके साथ ही यह समाज में लोगों के बीच के सभी भेदभावों को हटाने में भी सहायता करती है। यह हमें अच्छा अध्ययन कर्ता बनने में मदद करती है और जीवन के हर पहलू को समझने के लिए सूझ–बूझ को विकसित करती है। यह सभी मानव अधिकारों, सामाजिक अधिकारों, देश के प्रति कर्तव्यों और दायित्वों को समझने में हमारी सहायता करती है।

***प्रोफेसर**
राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लालसोट, दौसा (राज.)

संदर्भः–

1. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता डॉ. अजय भल्ला, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली 2003
2. भारतीय शैक्षिक परिवेश– डॉ. मनमोहन– एस.चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली 2008
3. भारतीय शिक्षा में समस्याएँ–पी.एन. सुखिया, साहित्य प्रकाशन आगरा 2002
4. उपरोक्त पृष्ठ 102
5. उपरोक्त पृष्ठ 103
6. उपरोक्त पृष्ठ 104
7. भारत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली प्रो. राजेश्वर–लक्ष्मीनारायण एण्ड सन्स आगरा 2004
8. भारतीय शैक्षिक परम्परा डॉ. विशेष गुप्ता का आलेख– अमर उजाला आगरा 10.10.2022